vinetur

दक्षिणी गोलार्ध में 2026 का वाइन उत्पादन 3% घटकर 4.7 करोड़ हेक्टोलिटर

OIV के अनुसार, जलवायु संबंधी दबाव के चलते क्षेत्रीय उत्पादन औसत से 7% नीचे रहा, हालांकि दक्षिण अफ्रीका में एक दशक की सबसे बड़ी फसल हुई

गुरुवार, 19 नवंबर 2026



अंतरराष्ट्रीय अंगूर एवं वाइन संगठन (OIV) ने बुधवार, 18 नवंबर को फ्रांस के डिजॉन में जारी शुरुआती अनुमानों में कहा कि 2026 में वैश्विक वाइन उत्पादन 2025 के स्तर के करीब रहने की उम्मीद है, लेकिन जलवायु संबंधी दबावों और बाजार की स्थितियों के चलते यह पांच साल के औसत से नीचे रहेगा।

OIV के अनुसार, दक्षिणी गोलार्ध में 2026 का उत्पादन लगभग 4.7 करोड़ हेक्टोलिटर रहने की संभावना है। वहां फसल कटाई वर्ष की पहली छमाही में पूरी होती है। यह मात्रा विश्व वाइन उत्पादन का लगभग 21% होगी, जो 2025 से 3% कम और पांच साल के औसत से 7% नीचे है। संगठन ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना और चिली समेत कई बड़े उत्पादक देशों में कमजोर नतीजों के कारण क्षेत्र का कुल उत्पादन औसत से नीचे रहा, जबकि कुछ अन्य देशों में बढ़ोतरी दर्ज की गई।

OIV ने कहा कि उत्पादक देशों में मौसम की स्थितियां काफी अलग-अलग रहीं। कुछ जगहों पर पाला, ओलावृष्टि, गर्मी और पानी की कमी से अंगूर की पैदावार घटी। दूसरी जगहों पर बारिश के बेहतर पैटर्न और बीमारी का कम दबाव होने से अंगूर के बागों को उबरने में मदद मिली। संगठन ने यह भी कहा कि कई देशों में बाजार की स्थितियों के आधार पर उत्पादन और फसल कटाई से जुड़े फैसलों ने नतीजों को प्रभावित किया।

2026 में दक्षिण अफ्रीका दक्षिणी गोलार्ध का सबसे बड़ा वाइन उत्पादक रहा। वहां उत्पादन अनुमानित 1.13 करोड़ हेक्टोलिटर था, जो 2025 से 10% अधिक और पांच साल के औसत से 14% ऊपर है। OIV ने कहा कि सीजन की शुरुआत में अनुकूल परिस्थितियों और फरवरी में हुई बारिश से कई क्षेत्रों में पानी की कमी का दबाव घटा, जिससे उत्पादन में बढ़ोतरी हुई। संगठन ने इसे दक्षिण अफ्रीका का एक दशक का सबसे बड़ा उत्पादन बताया।

अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा उत्पादक बना रहा, लेकिन वहां उत्पादन घटा। OIV ने अर्जेंटीना के वाइन उत्पादन का अनुमान 97 लाख हेक्टोलिटर लगाया, जो 2025 से 10% कम और पांच साल के औसत से 11% नीचे है। संगठन ने कहा कि देश के मुख्य वाइन क्षेत्र मेंडोज़ा में पाले और ओलावृष्टि से अंगूर की फसल को नुकसान पहुंचा और वाइन उत्पादन घट गया।

चिली का उत्पादन अनुमानित 95 लाख हेक्टोलिटर रहा। यह 2025 के कमजोर स्तर से 13% अधिक था, लेकिन फिर भी पांच साल के औसत से 13% नीचे रहा। OIV ने कहा कि 2026 में भी गर्मी और पानी की लगातार कमी ने पैदावार को सीमित किया। नतीजतन, 2025 से मामूली सुधार के बावजूद चिली में लगातार तीसरे साल उत्पादन अपेक्षाकृत कम रहा।

दक्षिणी गोलार्ध के प्रमुख उत्पादकों में ऑस्ट्रेलिया में सबसे तेज गिरावटों में से एक दर्ज की गई। OIV के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया का वाइन उत्पादन 91 लाख हेक्टोलिटर रहा, जो 2025 से 19% कम और पांच साल के औसत से 23% नीचे है। संगठन ने कहा कि बारिश की कमी, वसंत के आखिर में पड़ा पाला, लू और कुछ इलाकों में बाढ़ ने अंगूर उगाने की परिस्थितियों को बाधित किया। OIV ने यह भी कहा कि बाजार की स्थितियों का फसल कटाई के फैसलों पर असर पड़ा। प्रमुख उत्पादक राज्यों में अंगूर की पेराई की मात्रा घटी, और विक्टोरिया तथा न्यू साउथ वेल्स में गिरावट का प्रतिशत दक्षिण ऑस्ट्रेलिया से अधिक रहा।

न्यूज़ीलैंड का उत्पादन अनुमानित 32 लाख हेक्टोलिटर रहा। यह 2025 की बड़ी फसल से 15% कम और पांच साल के औसत से 5% नीचे है। OIV ने कहा कि हाल के वर्षों में बड़ी फसल के बाद उत्पादन में जानबूझकर किए गए बदलावों का भी छोटी फसल पर असर पड़ा। इससे आपूर्ति को बाजार की मांग के करीब लाने में मदद मिली।

ब्राज़ील क्षेत्र के बेहतर प्रदर्शन करने वाले देशों में रहा। वहां वाइन उत्पादन अनुमानित 31 लाख हेक्टोलिटर था, जो 2025 से 10% अधिक और पांच साल के औसत से 22% ऊपर है। OIV ने कहा कि ब्राज़ील के मुख्य वाइन उत्पादक राज्य रियो ग्रांडे दो सुल में सुधार 2026 में भी जारी रहा। संगठन के अनुसार, सर्दियों में पर्याप्त ठंड, आम तौर पर अनुकूल वसंत की परिस्थितियां और बीमारी का कम दबाव उत्पादन बढ़ने के मुख्य कारण थे।

उरुग्वे का उत्पादन अनुमानित 7 लाख हेक्टोलिटर रहा, जो 2025 से 13% अधिक और पांच साल के औसत से 7% ऊपर है। OIV ने कहा कि अच्छी वसंतकालीन बढ़वार, फूल आने के दौरान शुष्क मौसम और जनवरी में समय पर हुई बारिश से फसल को फायदा हुआ। बारिश ने पानी की कमी का दबाव घटाया और बेरी के विकास को सहारा दिया। बीमारी का कम दबाव भी सीजन के अंत तक फसल को बचाए रखने में मददगार रहा।

OIV के अनुमानों से पता चला कि दक्षिणी गोलार्ध का वाइन क्षेत्र अब भी मौसम की असमान स्थितियों और उत्पादन को लेकर सतर्क फैसलों से जूझ रहा है। दक्षिण अफ्रीका में जोरदार सुधार उल्लेखनीय रहा, जबकि ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना और चिली जलवायु संबंधी झटकों और कुछ बाजारों में कमजोर व्यावसायिक स्थितियों के दबाव में रहे।